विचार बिन्दु

आशा अमर है उसकी आराधना कभी निष्फल नहीं होती। –महात्मा गाँधी

भाजपा की ऐतिहासिक जीत–जनता की अपेक्षाएं

नवंबर 2023 में पांच राज्यों की विधानसभाओं के लिए चुनाव हुए, जिनमें से चार विधानसभाओं के परिणाम 3 दिसंबर 2023 को घोषित हुए हैं। इनमें से तेलंगाना में भारत राष्ट्र समिति को सत्ता से हटाकर कर कांग्रेस ने सत्ता हासिल की है। वहाँ 119 सीटों में से 65 सीटों पर विजय प्राप्त कर कांग्रेस ने सरकार बनाने का अधिकार प्राप्त किया है। शेष तीन राज्यों – राजस्थान, मध्य प्रदेश एवं छत्तीसगढ़ में भारतीय जनता पार्टी ने सभी ओपिनियन और एक्जिट पोल को गलत सिद्ध करते हुए ऐतिहासिक जीत प्राप्त की है। राजस्थान में भाजपा को 199 में से 115, मध्य प्रदेश में 230 में से 162 और छत्तीसगढ़ में 90 में से 54 सीटों पर विजय प्राप्त हुई है। किसी भी ओपिनियन पोल में (एक अपवाद को छोड़कर), इस प्रकार का अनुमान नहीं लगाया गया था ।

स्वाभाविक है, भारतीय जनता पार्टी के नेता एवं कार्यकर्ता गदगद हैं। कुछ दिनों में, इन तीनों राज्यों में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनेगी और इन राज्यों की सत्ता संभाल लेंगी। इस ऐतिहासिक विजय पर भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व और कार्यकर्ताओं को बहुत–बहुत बधाई। हम इस लेख में मुख्य रूप से राजस्थान के मतदाताओं की नई सरकार से अपेक्षाओं पर बात करेंगे । पूर्व में सभी एग्जिट पोल द्वारा यह संभावना व्यक्त की गई थी की राजस्थान में कांटे की टक्कर होगी एवं कोई भी दल, बहुत मुश्किल से अपनी सरकार बना पाएगा। ऐसा भी लगता था कि ऐसा करने के लिए उसे अन्य दलों एवं निर्दलीयों की सहायता लेनी पड़ेगी, जैसा कि पिछली बार कांग्रेस को करना पड़ा था। ऐसा कुछ नहीं हुआ एवं भाजपा अपने स्वयं के बलबूते पर अच्छे बहुमत के साथ सरकार बनाने जा रही है। राज्य के लिए यह अच्छा संकेत है, क्योंकि निर्दलीयों के भरोसे चलने वाली सरकार में हमेशा अस्थिरता की भावना रहती है । ऐसी सरकार में विधायक अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाते हैं और कई बार वे एक प्रकार से सरकार को जनहित के निर्णय लेने में बाधक भी बनते हैं। गहलोत सरकार के समय में देखा गया था कि सरकार का अस्तित्व ही विधायकों के मनमर्जी पर टिक गया था और इसका भरपूर लाभ विधायकों ने उठाया। सत्ताधारी दल के विधायकों के प्रति जनता की नाराजगी बहुत है, इसकी संभावना तो पहले से व्यक्त की जा रही थी, किंतु कांग्रेस इसमें सफल नहीं हो पाई कि अधिकांश विधायकों को उम्मीदवार न बनाए। इसका खामियाजा कांग्रेस को इस चुनाव में भुगतना पड़ा है।

एक और कारण जो कांग्रेस की हार के लिए संभावित लगता है वह है, हाई कमान का असहाय होना। ऐसा लगता था, जैसे राजस्थान के सन्दर्भ में कांग्रेस का हाई कमान कुछ कर ही नहीं पा रहा था। जब यहां राजस्थान में विधायक दल की बैठक में नेतृत्व परिवर्तन के संबंध में निर्णय लिया जाना था तो कांग्रेस के ही कुछ मंत्रियों ने इसकी अवहेलना करते हुए एक समानांतर बैठक बुलाकर हाई कमान को ही चुनौती दे डाली। केंद्रीय नेतृत्व के बारे में अपमानजनक बयान राज्य के मंत्रियों तक ने दिए, फिर भी हाई कमान मूक दर्शक ही बना रहा। भाजपा में ऐसी स्थिति की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

पूरे चुनाव प्रचार अभियान में केवल मुख्यमंत्री ही केंद्र में बने रहे। गत कुछ माह से मीडिया में केवल मुख्यमंत्री का ही चेहरा दिखाई देता था। सामूहिक नेतृत्व की बात को तिलांजलि सी दे दी गई थी। इसलिए प्रत्यक्ष रूप से तो सचिन पायलट और मुख्यमंत्री गहलोत के एक साथ होने की तस्वीर भी छपाई गई, किंतु अंदर कहीं ना कहीं समाज के एक बड़े वर्ग में सचिन पायलट से उनका वाजिब अधिकार छीने जाने की एक कसक उनके मन में थी। इसका प्रदर्शन उन्होंने चुनाव के समय मत देते समय किया। यह सर्वविदित है कि गहलोत सरकार के प्रारंभिक चार वर्ष तो केवल अपने आप को मुख्यमंत्री बनाए रखने में ही निकल गए। पूरा समय, जैसे–तैसे विधायकों को अपने साथ बनाए रखना और येन केन प्रकारेण सरकार को बनाए रखना ही पहली प्राथमिकता हो गई। यह कल्पना की जा सकती है कि उस राज्य सरकार में शासन और प्रशासन की क्या स्थिति होगी, जहां उसका पूरा समय केवल अपने विधायकों को संभालने में ही निकल जाए। इसी का यह परिणाम था कि राज्य में सुशासन का कोई चिन्ह देखने को नहीं मिलता था। महिलाओं पर बलात्कार और शोषण के मामले निरंतर बढ़ते रहने से राज्य की बहुत बदनामी हुई। मंत्री, विधायक और अधिकारी मनमानी करने में लगे थे । जनकल्याणकारी योजनाएं जो राज्य सरकार द्वारा बनाई गईं, उनका लाभ भी प्रभावी रूप से वंचित वर्ग को नहीं मिल सका। फलस्वरुप जितना अधिक प्रचार इन योजनाओं का करोड़ों रुपये के विज्ञापनों के द्वारा किया गया, उतनी ही लोगों की अपेक्षाएं तो बढ़ीं, किंतु उनको अपेक्षा के अनुसार लाभ न मिल पाने के कारण उन्होंने स्वयं को ठगा सा महसूस किया।

इस परिणाम से एक और संकेत मिलता है, वह यह कि जनता को केवल मुफ्त की वस्तुएं देकर आप उनसे उनका मत खरीद नहीं सकते। राजस्थान में इस संबंध में कई प्रकार के प्रयास किए गए, विशेष कारण अंतिम तीन–चार माह में, जैसे महिलाओं को मोबाइल बांटना, सस्ती रसोई गैस देना, मुफ्त बिजली, महिलाओं को प्रति वर्ष 12000 रुपये देने की घोषणा हो। कई लोगों ने इनका लाभ लिया भी होगा, किंतु इसका परिणाम सत्ताधारी दल को इन चुनाव में देखने को नहीं मिला। जनता ने इस प्रकार की मुफ्त वस्तुएं एवं सुविधा लेने के स्थान पर इस बात पर अपना समर्थन दिया कि उन्हें ऐसा सुशासन चाहिए जिसमें भ्रष्टाचार नहीं हो, योग्य व्यक्तियों को लोक सेवा आयोग के माध्यम से अथवा अन्य विभागों के माध्यम से समय पर नौकरियां मिले, भाई भतीजा अथवा भ्रष्टाचार न हो, महिलाओं की सुरक्षा हो। यह उल्लेखनीय है कि राजस्थान में बेरोजगारों के साथ बहुत बड़ा धोखा हुआ और लोक सेवा आयोग के चयन एवं अन्य चयन प्रक्रियाओं में बहुत धांधली सामने आई। युवाओं के समक्ष रोजगार एक बड़ा मुद्दा रहता है और यदि पद रिक्त होने के बाद भी योग्य व्यक्तियों का समय पर चयन होकर उन्हें नियुक्ति न मिले तो उनके मन में आक्रोश पनपता है जिसका प्रकटीकरण चुनाव में होता है।

> **इस परिणाम से एक और संकेत मिलता है, वह यह कि जनता को केवल मुफ्त की वस्तुएं देकर आप उनसे उनका मत खरीद नहीं सकते। राजस्थान में इस संबंध में कई प्रकार के प्रयास किए गए, विशेष कारण अंतिम तीन-चार माह में, जैसे महिलाओं को मोबाइल बांटना, सस्ती रसोई गैस देना, मुफ्त बिजली, महिलाओं को प्रति वर्ष 12000 रुपये देने की घोषणा हो।**

एक नया मुख्यमंत्री राजस्थान को शीघ्र मिल जाएगा। वैसे तो राजस्थान में इसी परंपरा को आगे बढ़ाया गया है कि प्रत्येक 5 वर्ष में शासन बदले। जनता इसके अलावा और कर भी क्या सकती है कि जब भी उसे मौका मिले मत के प्रयोग के माध्यम से सत्तादारी दल में परिवर्तन लाए। हर बार सरकार बदलने के रिवाज से एक सीख नए शासन संभालने वालों को लेनी चाहिए कि जनता अच्छे शासन, चुस्त प्रशासन, संवेदनशील और ईमानदार प्रशासन की अपेक्षा नई सरकार से करती है। हमारे पड़ोसी राज्य मध्य प्रदेश में 18–20 वर्षों से एक ही दल की सरकार है और वहां पर इस बार शासन बदलने का अनुमान गलत सिद्ध हुआ। इसका अर्थ यही निकलता है कि वहां पर जनता ने वहां की राज्य सरकार द्वारा किए गए शासन को पसंद किया एवं अत्यंत भारी बहुमत के साथ इस सरकार को फिर सत्ता में लेकर आए । जब कांग्रेस को बहुमत 2018 में मिला तो भी वह अधिक समय तक शासन संभाल नहीं पाए और एक डेढ़ वर्ष में ही सत्ता गंवा फिर विपक्ष में आ गए।

भाजपा के शीर्ष नेतृत्व को राजस्थान के लिए सुयोग्य सर्व– स्वीकार्य मुख्यमंत्री का चयन शीघ्र ही करना होगा। वह व्यक्ति ऐसा होना चाहिए जो जनता को संवेदनशील ईमानदार और सुशासन प्रदान कर वंचित लोगों तक विभिन्न योजनाओं का लाभ सही रूप में पहुंचाने का कार्य कर सके और बेईमान नौकरशाही पर पूरा अंकुश लगा सके। उन्हें अधिक समय इस पर नहीं लगाना पड़ेगा कि विधायकों को संभाल कर रखें।

नई सरकार को यह बात अवश्य ध्यान रखनी होगी कि गत विधानसभा चुनाव – 2018 में इन तीनों राज्यों में बहुमत से कांग्रेस सरकार बनी थी । उसके बावजूद जून, 2019 के लोकसभा चुनाव में इन तीनों राज्यों में कुल मिलाकर दो लोकसभा सीट ही कांग्रेस को प्राप्त हुई थी। यदि इससे कुछ सीख मिलती है तो वह यह कि आगामी चार–पांच महिनों में नई सरकार को सिद्ध करना होगा कि वह पहले की सरकार से कुछ अलग प्रकार की है एवं वह केवल लोक लुभावने वादे ही नहीं करती अपितु लोगों को अच्छा शासन भी देने की योग्यता एवं क्षमता रखती है। ऐसा करते समय उसे धर्म, जाति के भेदभाव से ऊपर उठकर जो भी अपराधी तत्व अथवा भ्रष्टाचारी अधिकारी, कर्मचारी हों उन पर कड़ा अंकुश लगाना होगा ताकि जनता को सरकार के द्वारा प्रताड़ित होने से एवं भ्रष्टाचार का दंश झेलने से राहत मिल सके। यदि इस अवधि में वह अच्छा शासन जनता की अपेक्षा अनुसार देने में सफल नहीं हो पाएंगे तो फिर संभव है कि इसका नुकसान लोकसभा चुनाव में सत्ता धारी दल अर्थात भाजपा को उठाना पड़ सकता है।

इन परिणामों ने एक बार पुनः यह सिद्ध किया है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अभी तक जनता में स्वीकार्यता यथावत है। उन्हें इन तीनों राज्यों की शासन व्यवस्था पर एक निगाह रखनी पड़ेगी, ताकि विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं का किस प्रकार का क्रियान्वयन इन राज्यों में हो रहा है, यह सुनिश्चित किया जा सके। जनता ने बड़ी आशा और अपेक्षा के साथ भाजपा को इन तीन राज्यों का शासन सौंपा है और यह उम्मीद करती है कि वह जनता के सभी वर्गों की अपेक्षाओं पर खरा उतरने का काम करेगी।

इन परिणामों ने यह भी दिखा दिया कि जनता ने जातिगत जनगणना की बात को महत्व नहीं दिया एवं भाजपा द्वारा जातिगत जनगणना की बात को अस्वीकार करने के बावजूद उसे सत्ता में बिठाया है । यह राष्ट्र के लिए एक शुभ संकेत है कि देश की सत्ताधारी पार्टी विभाजनकारी प्रवृत्ति से ऊपर उठकर सबके लिए कल्याण की बात सोचती है। इस संकेत को 'इंडिया एलाइंस' को भी समझना होगा कि केवल जनता को बरगलाकर, जाति–पांति में विभाजित करके अब समर्थन हासिल नहीं किया जा सकता है।

तेलंगाना के परिणाम ने यह अवश्य बता दिया कि जिस प्रकार का जादू भाजपा का इन तीन राज्यों में चला उसी प्रकार का दक्षिण के राज्य तेलंगाना में नहीं चला। वहां 10 वर्षों से शासन में भारत राष्ट्र समिति को अपदस्थ कर कांग्रेस ने बहुमत प्राप्त किया है। यदि वहां पर वह अच्छा शासन दे पाती है, तो भाजपा के लिए दक्षिण भारत में प्रवेश करने हेतु और प्रतीक्षा करनी होगी। उत्तर और दक्षिण का यह अन्तर, देश के लिए क्या संकेत देता है, इसको समझना कठिन है। यदि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पूरे देश के सर्वमान्य नेता के रूप में अपने आप को स्थापित करना है तो उन्हें केवल उत्तरी भारत नहीं बल्कि दक्षिण भारत के राज्यों में भी अपने जड़ों को मजबूत करना होगा। ऐसा अभी तक वह नहीं क्यों कर पाए हैं, इसका भी विश्लेषण भाजपा के उच्च नेतृत्व को करना पड़ेगा। हाल ही में वह कर्नाटक को खो चुकी है और अब वह तेलंगाना में प्रयास करने के बावजूद भी सफ़लता प्राप्त नहीं कर पाई है। तमिलनाडु और केरल में तो वैसे ही भाजपा की कोई पहचान नहीं बन पाई है। अंत में यही कहा जा सकता है कि भाजपा की ऐतिहासिक जीत ने एक ऐतिहासिक जिम्मेदारी भाजपा के कंधे पर डाली है। जनता यही अपेक्षा कर रही है कि शीघ्र ही नई सरकार बने और उसे सुशासन उपलब्ध कराए जहां अधिकारी गण अपनी मनमानी न कर पाएं एवं विधायक गण केवल तबादले की ही राजनीति में उलझ कर ना रह जाए । उसे आवश्यकता है अच्छी गुणवत्तापूर्ण शिक्षण व्यवस्था की, अच्छी स्वास्थ्य व्यवस्था की और सुरक्षित जीवन की। यदि सरकार आने वाले समय में महिलाओं की गरिमा और सुरक्षा को सुनिश्चित कर पाई, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और स्वास्थ्य उपलब्ध करा पाई, रोजगार के अवसर उपलब्ध करके चयन प्रक्रिया को भ्रष्टाचार मुक्त कर पाई तो, उसे लगेगा कि उसने भाजपा को सत्ता सौंप कर सही काम किया है। जनता ने तो अपना काम कर दिया, अब सरकार की बारी है कि वह जनता की अपेक्षाओं पर खरा उतरे। इस हेतु नई सरकार को अनेकानेक शुभकामनाएं।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

विधायक और सांसदों की संपत्ति में वृद्धि आंकलन का नायाब तरीका

डॉ. (प्रो.) वीर बहादुर सिंह

मैं कई वर्षों के प्रयास से भी इस पहेली को नहीं सुलझा पाया कि जन प्रतिनिधि इस देश में एक दो बार विधायक/सांसद बनते ही करोड़पति अथवा अरबपति कैसे बन जाते हैं और अकूत संपत्ति एकत्रित कर लेते हैं? क्या यह भारत के लोकतंत्र की विशेषता है अथवा कमजोरी अथवा कुछ और? यदि यह कमजोरी है तो इस लूट और डकैती को प्रतिबंधित करने के लिए कारगर उपाय संविधान संशोधन के द्वारा अभी तक क्यों नहीं किये गए? उत्तर साफ़ है कि विधायक अथवा संसद इसमें दखल देकर अपने पैरों पर कुल्हाड़ी क्यों मारें? एक तीसरा जरिया सुप्रीम कोर्ट भी है लेकिन वे क्यों सरकार से लड़ेंगे? चुनाव आयोग अब श्री शेषन के बाद निशक्तजन की श्रेणी में आ चुका है।

चुनाव लड़ने की न तो मेरे में शक्ति है और न ही कोई अन्य स्वार्थ। मैं तो इस खेल की व्यूह रचना समझने की जिज्ञासा अर्से से पाले हुए हूँ लेकिन कोई अवसर नहीं मिला कि देश के लोकतंत्र की इस विशेषता को समझ पाता। कुछ वर्षों पूर्व मेरे कुछ परिचित विधायक और सांसद भी थे। परन्तु मैंनें कभी उन्हें अपने व्यक्तिगत कार्य के लिए उपयोग में नहीं लिया इसलिए मैं उनसे काफी स्पष्ट और न की जाने वाली बात भी कह लेता था। उपरोक्त पहेली को सुलझाने के बारे में भी मैंनें उनसे पूंछा तो वे हंस कर टाल जाते और कहते कि कोई काम हो तो बताओ। ऐसे किसी राजनैतिक नेता से भी सम्बन्ध रखने में मैंनें स्वार्थ को हावी नहीं होने दिया, जिससे मेरा उनसे सम्बन्ध उनके मरते दम तक बना रहा।

आज जब मैं अस्सी वर्ष से अधिक हूँ। मैंने आरम्भ के 22 वर्ष शिक्षा में बिताये और बाद के लगभग 40 वर्ष उच्च शिक्षा व् अनुसन्धान में विश्वविद्यालय स्तर की संस्थाओं में गुजारे, और अंत में विश्वविद्यालय के उच्च तम शिखर कुलपति के पद पर आसीन रहा। कार्य की दृष्टि से पूर्ण संतुष्ट रहा। आर्थिक स्तर भी कमोवेश ठीक ही रहा। लेकिन अब सेवा निवृति के पश्चात् पूर्व काल के विश्लेषण में काफी समय देता हूँ तथा समाज के अन्य वर्गों से समानता के आधार पर पाता हूँ कि मैंने सेवा काल के 40 वर्ष बेकार ही नष्ट किये। क्योंकि मैं दूसरों की भांति एक करोड़ की सम्पति भी नहीं जोड़ सका और अपने दो बेटो और दो बेटिओं में किसी को मेडिकल, अभियांत्रिकी अथवा बिज़नेस स्कूल में नहीं पढ़ा सका। यह व्यथा मुझे आज तक कचोट रही है। खैर, यह तो एक व्यक्तिगत मामला है क्योंकि मेरे जैसे अनेक लोग इस देश में होंगे जो मेरे जैसा ही अनुभव रखते हैं।

एक बार में यह हिसाब लगाने बैठा कि इस देश में समस्त विधायकों और सांसदों पर सरकार वेतन, भत्ते, पेंशन, टेलीफोन आदि विभिन्न मदों पर वार्षिक कितना धन खर्च करती है? मेरा दिमाग़ चकरा गया जब सोलह अरब तक आंकड़ा पहुंच गया। उस गणना को मैंनें वहीं त्याग दिया। आश्चर्य तो इस बात का है कि इस प्रकार की सूचना अथवा आंकड़े गूगल पर भी नहीं मिलते। इसलिए देश की जनता इस पक्ष पर हमेशा अनभिज्ञ ही रहती है।

इस सन्दर्भ में मुझे एक पौराणिक कथा शंकराचार्य और मंडन मिश्र की पत्नी के बीच हुए ज्ञान सम्बन्धी सम्बाद की याद आ रही है। कथा की सही कड़ियाँ संजोने में भूल हो सकती है फिर भी उसे यथा भावार्थ रूप में यहाँ लिखने का प्रयास कर रहा हूँ। कथा इस प्रकार है। एक बार शंकराचार्य और मंडन मिश्र की पत्नी के बीच धर्म पर सम्बाद शुरू हुआ। शास्त्रार्थ के बीच मंडन पत्नी ने शंकराचार्य को योनि सम्बंधित किसी विषय पर छेड़ दिया। शंकर चूंकि ब्रह्मचारी थे उस विषय पर, मंडन पत्नी से उस समय हारते हुए कुछ समय पश्चात् इस विषय पर चर्चा करने को कहा, जिसे मंडन पत्नी ने स्वीकार कर लिया। तत्पश्चात शंकर एक स्त्री के गर्भाशय में प्रवेश कर गए और वहां उन्होंने वे सभी क्रियाएं देख ली और फिर कुछ समय पश्चात् पुनः उस विषय पर चर्चा कर मंडन पत्नी को हरा दिया।

इस उद्धरण को यहाँ देने का मेरा प्रयोजन है कि किसी विशेष अवस्था को समझने के लिए उस अवस्था के भीतर प्रवेश करके देखना कभी–कभी जरुरी होता है। तभी उस विषय की पूर्णता को समझा जा सकता है और वर्णन करने में व्यक्ति समर्थ हो सकता है ।

अतः जन प्रतिनिधिओं की सम्पति दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ने की कला को सीखने–समझने के लिए मेरा एक बार किसी प्रकार जनप्रतिनिधि बनना आवश्यक है। चुनाव मैं लड़ नहीं सकता क्योंकि मेरे पास उसके लिए धन नहीं है और न ही मेरी जनता के बीच ऐसी कोई प्रसिद्धि जो मैं चुनाव जीत सकूँ। अतः मैं देश की सरकार से विनम्र आग्रह करता हूँ कि मुझे एक बार बिधायक अथवा सांसद नॉमिनेट कर सदन में पहुँचा दे। मेरा इस बाबत कोई प्रलोभन नहीं है। बस यह देखना चाहता हूँ कि सम्पति कैसे बढ़ती है? मैं शप्रथ पूर्वक यह भी घोषणा करता हूँ कि उक्त कार्य काल में मेरी संपत्ति में जो भी अवाजिब बढ़ोतरी होगी उसे मैं कार्य काल समाप्ति पर सरकार को स्वतः ही लौटा दूंगा और सरकार को संपत्ति वृद्धि के बारे में कोई जानकारी नहीं दूंगा जब तक कि नतीजे और उनके लिए विवरण एकत्रित न कर लू । यद्यपि मैं राजनीत का खिलाडी नहीं हूँ। मेरी संपत्ति में वृद्धि अन्य की अपेक्षा कम ही रहेगी। अतः इस बढ़ोतरी को मैं न्यूनतम मान लूँगा, और अन्य पुराने जनप्रतिनिधिओं के बारे में आंकलन कर निष्कर्ष निकालूंगा।

मेरे विचार से जनता भी यह जानना चाहेगी कि जनप्रतिनिधिओं की सम्पति किस प्रकार बढ़ती है? उस मैकेनिज्म को समझने में मैं सफल हो जाऊँगा। अभी तो मैं यह भी चाहता हूँ कि देश के हर इक्छुक नागरिक को एक बार जनप्रिनिधि बनाने का प्रावधान भी किया जाय। जिससे वह कम से कम एक करोड़ का स्वामी तो बन जाय।

इस प्रयोग में मुझे यदि सफलता मिलती है, तो मैं वादा करता हूँ कि इसके परिणामों के आधार पर सामाजिक क्षेत्र के अनुसन्धान कर्ताओं के लिए एक बृहत क्षेत्र अनुसन्धान के लिए खोल दूंगा ,जिससे अनेक सरकारी जांच एजेंसियां यथा एनफोर्समेंट निदेशालय सेंट्रल इन्वेस्टीगेशन एजेंसी आदि को अनेक प्रकार से सहायता मिल सकेगी। केंद्रीय सरकार के सम्बंधित विभाग सांख्यकी, इकोनॉमिक्स जैसे अपने स्तर पर भी इस विषय पर अन्य तरीकों से प्रोफोर्मा विकसित कर अनुसन्धान के लिए अपने तरीके से अग्रसर हो सकेंगे। फिर इस मसले पर सोचने और आगे अठासर होने से एक ऐसा अनुसन्धान क्षेत्र विकसित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

गरीबों पर अनेक एजेंसिओं ने बहुत अनुसन्धान किये अब अमीरों व् धनाढ्य वर्ग पर भी अनुसन्धान के लिए द्वार खुलने चाहिए। इस अभिनव प्रयोग के परिणाम आम जनता को झकझोरने वाले और जागरूकता उत्पन्न करने में महती भूमिका निभाएंगे। पाठक गण उक्त मेथोडोलोजी से यदि सहमत हों तो जहाँ संभव हो मेरी सिफारिश और सहायता करें। अज्ञानी और मूड़ कृपया प्रतिक्रिया न दें। क्योंकि मूढ़ता पर मैं एक सम्पादकीय विस्तृत लेख इसी अखवार में जनता और जन प्रतिनिधिओं की जानकारी के लिए प्रकाशित करवा चुका हूँ।

-डॉ. (प्रो.) वीर बहादुर सिंह,
खाद्य प्रौद्योगिकी विज्ञ,
उदयपुर, राजस्थान

लौकिक से अलौकिक की यात्रा

ध्यान के विज्ञान पर अश्विनी गुरु जी के साथ एक विशेष सत्र

सालासर, राजस्थान। अश्विनी गुरुजी के साथ एक विशेष, 6 दिवसीय रिट्रीट में सीखें ध्यान के द्वारा दिव्यता तक पहुँचने की प्राचीन तकनीकें। इस रिट्रीट का आयोजन, राजस्थान में 5 से 10 दिसंबर तक किया जाएगा।

आधुनिक इतिहासकारों के अनुसार, जब दुनिया में बर्बरता अपने चरम पर थी, तब हमारे वैदिक ऋषि ऐसी खोजें कर रहे थे जो आधुनिक विज्ञान द्वारा अभी तक ज्ञात नहीं है। ऐतिहासिक वृत्तांतों में ऐसी कहानियाँ भरी पड़ी हैं जहां चमत्कारी खोजें हुईं। ऐसे पुल बनाए गए जो मानव द्वारा निर्मित किया जाना असंभव लगता है। खोजें जहां पृथ्वी पर बारिश और नदियाँ लाई गईं, जिन्होंने समानांतर ब्रह्मांड बनाए, जिन्होंने इच्छानुसार अपना शरीर छोड़ दिया, प्रश्न यह है कि योगी और ऋषि कैसे यह सब कुछ हासिल करने में सक्षम थे वह भी हजारों वर्ष पहले?

एक सामान्य व्यक्ति का मस्तिष्क 7–8 प्रतिशत की दक्षता पर काम करता है, जो पांच इंद्रियों द्वारा बुनियादी कार्यकलापों के लिए पर्याप्त है। हालांकि एक मनुष्य के पास 16 इंद्रियां होती हैं, जो 92–93 प्रतिशत मस्तिष्क पर कार्य करती हैं। ध्यान आश्रम के अश्विनी गुरु जी कहते हैं, यह अप्रयुक्त क्षमता है, जिसे योग विज्ञान के माध्यम से वैदिक गुरुओं द्वारा उपयोग किया गया था। वह जो कर सकते थें, आप भी कर सकते हैं।

योगी जी पिछले दो दशक से अधिक न केवल प्राचीन वैदिक विज्ञान सिखा रहे हैं, बल्कि उन्होंने परिमाण स्वरूप 200 आईएमए डॉक्टरों और दर्शकों के सामने लाइव, दूरदर्शिता के विज्ञान को सिद्ध किया है।

योग का विज्ञान कई चरणों में प्रकट होता है, पहले तत्वों के माध्यम से, फिर चेतना और अंत में दिव्यता के माध्यम से। अश्विनी गुरु जी, राजस्थान में ध्यान के विज्ञान पर 6 दिवसीय विशेष रिट्रीट में कुछ दुर्लभ और प्राचीन तकनीकों का अनावरण करेंगे।

योग की इस अद्भुत यात्रा पर – अपने शरीर को बदलें, उम्र बढ़ने की प्रक्रिया को रोकें और निश्चित रूप से, कभी बीमार न पड़ें !

पत्नी की मौत के पांच दिन बाद 91 वर्षीय गुलाब खां की मौत

घांघू, (निसं)। गांव घांघू में पत्नी की मौत के महज 5 दिन बाद 91 वर्षीय शिक्षाप्रेमी गुलाब खां की मौत हो गई। पत्नी शतुल बानो की मौत का सदमा सहन नहीं कर पाए गुलाब खां का निधन सोमवार को हो गया।

परिजनों ने बताया कि 91 वर्षीय गुलाब खां एकदम स्वस्थ चल रहे थे कि अचानक पिछले दिनों उनकी पत्नी शतुल बानो का 86 वर्ष की आयु में निधन हो गया था। पत्नी की मौत के बाद ही सदमे में आये गुलाब खान उसी दिन से अनमने और अस्वस्थ से रहने लगे थे। परिजन भी उनकी उदासी देखकर चिंतित थे। सोमवार को जब गुलाब खां ने अपनी आखिरी सांस ली तो हर व्यक्ति की जुबान पर पति–पत्नी की मोहब्बत और मौत की चर्चा थी।

गुलाब खां सभी समाज के बच्चों की शिक्षा के लिए सदैव चिंतित रहते थे और हर किसी से मुलाकात के दौरान पढ़ाई, लिखाई और नौकरी के सम्बंध में ही चर्चा करते थे। वे अपने पीछे पुत्र प्रधानाचार्य कासम अली, अध्यापक रमजान खान, लैब टेक्नीशियन जब्बार खान, शफी खान और सत्तार खान सहित भरा पूरा परिवार छोड़कर गए हैं। उनके जनाजे में बन्ने खां, समाजसेवी महावीर नेहरा, संजय दर्जी, शौकत खां सीटीआई, बीरबल नोखवाल, पूर्व पंचायत समिति सदस्य बरकत अली, अशोक मेघवाल, बालूराम जांगिड़, नजीर खां, जाफर खां मलवान, आजम खां, युसुफ खान, मुकारब खां, सफी फौजी, परवेज खान, करणीराम सहित सैकड़ों की संख्या में लोग शामिल हुए।

कृषि उद्यमी कृषकों को पुरस्कार मिलेगा

अजमेर, (कासं)। कृषि उद्यम के क्षेत्रों में सर्वश्रेष्ठ कार्य करने वाले कृषकों को पुरस्कार प्राप्त करने के लिए कृषक आगामी 20 दिसम्बर तक आवेदन कर सकते हैं।

कृषि विभाग आत्मा परियोजना के उपनिदेशक डॉ. के.जी छीपा ने बताया कि आत्मा योजन्तर्गत वर्ष 2023–24 में राज्य जिला तथा पंचायत समिति स्तर पर विभिन्न कृषि उद्यमों के श्रेष्ठ कृषकों को पुरस्कृत किया जाएगा। इसके लिए आवेदन की अन्तिम तिथि 30 नवम्बर से बढ़ाकर 20 दिसम्बर की गई है। योजना के तहत कृषि, उद्यानिकी, पशुपालन एवं डेयरी, जैविक खेती तथा नवाचारी खेती करने वाले किसानों को पुरस्कार दिया जाएगा। पुरस्कार के लिए प्रत्येक गतिविधिवार पंचायत समिति स्तर पर राशि 10 हजार रूपए, जिला स्तर पर राशि 25 हजार रूपए एवं राज्य स्तर पर राशि 50 हजार रूपए पुरस्कार के तौर पर दी जाती है।

उन्होंने बताया कि आत्मा योजना के तहत् गत वर्षों में किसी भी स्तर पंचायत समिति, जिला एवं राज्य स्तर पर पुरस्कृत कृषक वर्ष 2023–24 कृषक पुरस्कार के लिए पात्रा नहीं होंगे।

जेईई–मेन–2024 : 14.10 लाख ने आवेदन किया

> ■ 'आवेदन में करेक्शन 6 से 8 दिसंबर तक कर सकेंगे'

कोटा, (निसं)। देश की सबसे बड़ी इंजीनियरिंग प्रवेश परीक्षा जेईई–मेन के लिए आवेदन प्रक्रिया सोमवार रात को समाप्त हो गई। इस वर्ष पहली बार जेईई–मेन के इतिहास में सर्वाधिक 14 लाख 10 हजार से अधिक विद्यार्थियों ने आवेदन किया। इतनी अधिक संख्या में आवेदन जेईई–मेन के आयोजन के बाद सर्वाधिक है। गत वर्ष की तुलना में यह संख्या करीब 8.60 लाख थी, जो कि इस वर्ष 5 लाख अधिक है।

एलन कॅरियर इंस्टीट्यूट के कॅरियर काउंसलिंग एक्सपर्ट अमित आहूजा ने बताया कि आवेदन में हुई त्रुटियों में 6 से 8 दिसम्बर तक करेक्शन कर सकते हैं। एनटीए की ओर से जारी किए गए एफएक्यू के अनुसार जिन विद्यार्थियों ने सेशन–1 के लिए आवेदन किया है, वे अतिरिक्त परीक्षा शुल्क देकर सेशन–2 के लिए भी आवेदन कर सकते हैं। इसके साथ जिन विद्यार्थियों ने सेशन–1 व 2 दोनों के लिए एक साथ आवेदन कर दिया है, वे करेक्शन के दौरान सेशन–2 की परीक्षा के लिए किए गए आवेदन को रद्द कर सकते हैं, लेकिन इसमें उनका परीक्षा शुल्क वापस नहीं किया जाएगा।

एफएक्यू में स्पष्ट किया गया है कि करेक्शन के दौरान जिन विद्यार्थियों ने केवल बीई–बीटेक के लिए आवेदन किया है। वे बीआर्क व बी–प्लानिंग के लिए अतिरिक्त परीक्षा शुल्क देकर आवेदन कर सकते हैं। परन्तु ऐसे विद्यार्थी जिन्होंने पूर्व में सभी कोर्सेज के लिए आवेदन कर दिया है और वे इन परीक्षाओं में शामिल नहीं होना चाहते हैं तो ऐसे विद्यार्थियों को परीक्षा शुल्क वापस नहीं किया जाएगा। वहीं ऐसे विद्यार्थी जिन्होंने आवेदन के दौरान किसी कारण से कई बार परीक्षा शुल्क का भुगतान कर दिया है और इसकी सूचना एनटीए को भी मिल गई है तो ऐसे विद्यार्थियों को अतिरिक्त परीक्षा शुल्क का भुगतान जेईई–मेन फाइनल परिणामों के बाद रिफण्ड कर दिया जाएगा।

राशिफल मंगलवार 5 दिसम्बर, 2023

पंडित अनिल शर्मा

मार्गशीर्ष मास, कृष्ण पक्ष, अष्टमी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2080, पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र रात्रि 3:38 तक, विष्कुम्भ योग रात्रि 10:41 तक, बालव करण दिन 11:19 तक, चन्द्रमा आज सिंह राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–वृश्चिक, चन्द्रमा–सिंह, मंगल–वृश्चिक, बुध–धनु, गुरू–मेष, शुक्र–तुला, शनि–कुम्भ, राहु–मीन, केतु–कन्या राशि में।

आज श्री काल भैरवाष्टमी, कालाष्टमी, प्रथमाष्टमी है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:41 से 10:59 तक, लाभ–अमृत 10:59 से 1:35 तक, शुभ 2:53 से 4:11 तक।

राहूकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 7:05, सूर्यास्त 5:29

मेष

परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। आपसी ईर्ष्या–वैमनस्यता के कारण परेशानी हो सकती है। व्यक्तिगत कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

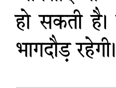

वृष

घर–परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

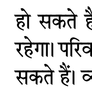

मिथुन

व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों को नवीन जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

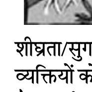

कर्क

वाणी पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। परिवार में वाद–विवाद टालना ठीक रहेगा। खान–पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को उच्चाधिकारियों की नाराजगी का सामना करना पड़ सकता है।

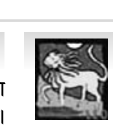

सिंह

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

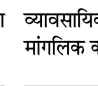

कन्या

आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। धन हानि हो सकती है। मन में असंतोष बना रहेगा। पारिवारिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी।

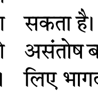

तुला

आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

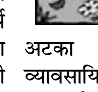

वृश्चिक

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी।

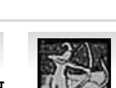

धनु

शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। शुभ कार्यों को टालना ठीक रहेगा। पारिवारिक मामलों में दुविधा बनी रहेगी। अनावश्यक धन खर्च होगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

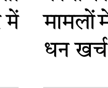

मकर

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा में परेशानी हो सकती है।

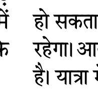

कुंभ

परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक सफलता से मनोबल–बढ़ेगा।

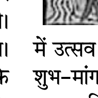

मीन

व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।